

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

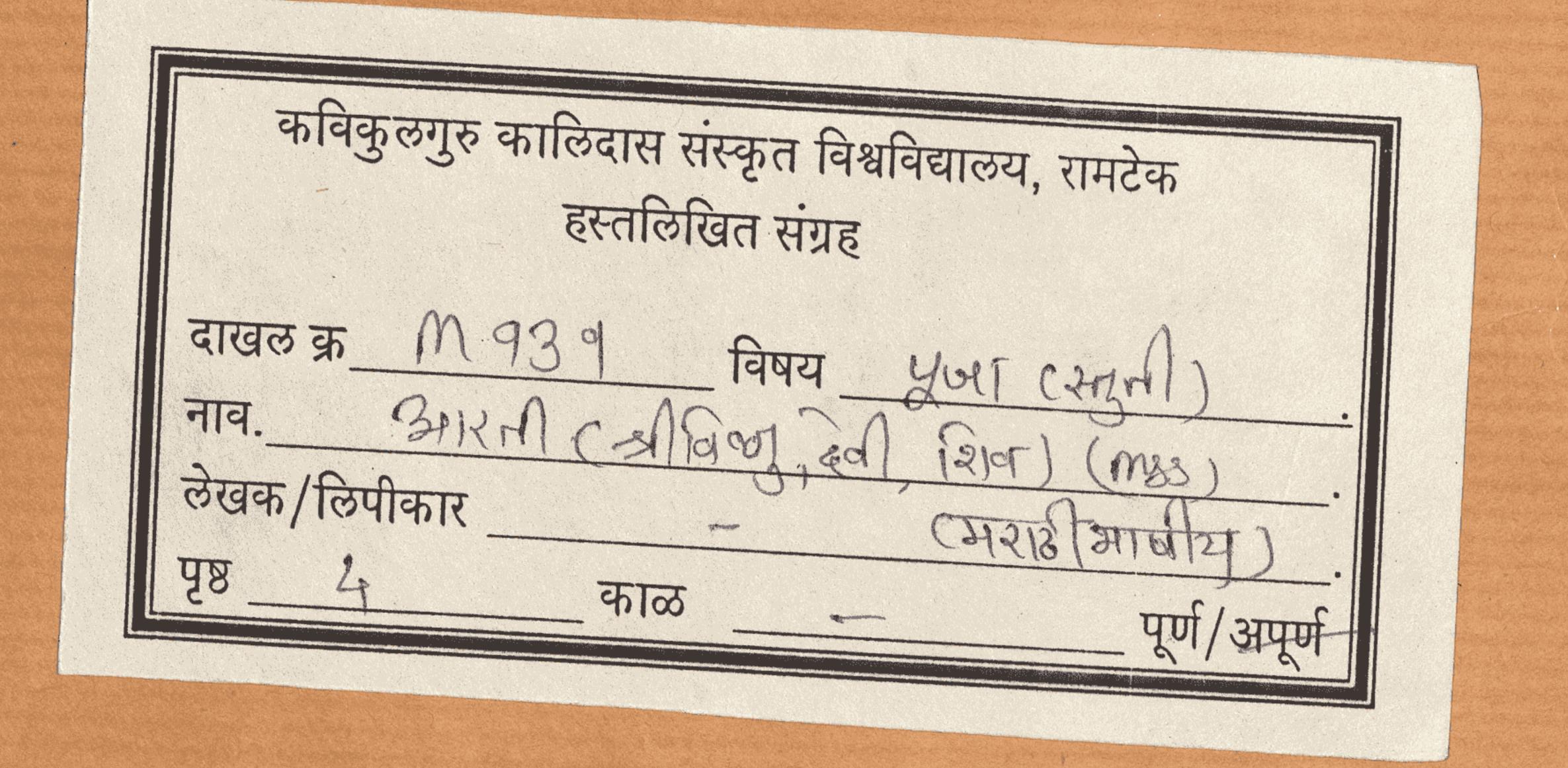
https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/



अं। अग्राती गणपती चीर भ अगादि गणनायका निवतामणि द्वा १ जियाधार तम लणती किरिती सुर मिना ॥ नकके श्रष्टाविकी पार्व-तीस्त हेना॥ भावें पहावा गावा निममानीसं ध्यावा गु ९ भ जयदेन जयदेन जय गणपति स्वामी । पंच्याणी अनार्ति करी-तो नुज्ञा भी भुज्यद्व । धृ० भुपश् अनुकश कमका धार्क अवलाखा भारतिहर्-चिन्थाका शाभारति विषुकाका भगंउकपा-लालकात पुष्पा-व्या माळा । रूणसुण -चरणी हाती तृपुर अनन-छीळा गुर्ग जयंद्व० गुन्बलध्यन्गामरी नुजला मिर्बाती ग उदीराचे भारम मुजला मणपती गुर्गान्यांच छाडू शाभनी हाती गु 313र्या

मूली अन्बंह्या किता न ढळती पाता गुं ३ गु ज्यद्य ० गु राजस उदिर टकमक टकमक मग-गांछ गु हाछल मारहत दांदिखं उग्छत मग-बारि । ध्यानं ध्यातां स्वीह जन घारि । हिरमुणेमंडित नाणीं जन पंडित बोलें। जर्यद्व ग्रे ४ गु-अनार्ती विष्णू नी ग्रे जय जय जगनगकनका चिन्मयं चिष्धिननका ॥ सुखकर ब्रह्म प्रा त्पर् त्रियतर् मिन सनका गु भवदल भंजन सुर्पति हिर् मायाहरकाग कमलावर् कमलात्रिय चुकवीं भवगर्का ॥ ३॥ जयदेव जयदेव जय-माध्यय विष्णा, श्रीमाध्य विष्णा भ्रव्यापक सर्वे चराचर - ब्रामिन्य-पूर्ण परात्पर प्रमीद भव विशा । धृन्। जलकार मन्द्धीह कन्द्र-

3

वराह हिषिकेशी भ नर्मिहाकृतिवामन दिन रघुपति होसी भ यदुपति बी न्हिं कल्की दशनिध तन् रेसी भ भक्तजनिषय धक्नी जगणासन क-रिसी जय० गुर्ग सिद्धित्स्वरूपस्याना विस्कृति हे जीव व्यथित्व अवि नेकाने पानित देह भाग ग्रम्मर्तां तन पद हद्यीं हद्देतर स्द्रान ग्रम्क-इनि सङ्गुरूषें उन्हर्सीदेव गुरुगु नया गु लंपद तायद माया समछि जाममा। । सम्बन्ध तं साध्नीविर्हित जाउवर्गा । साध्नीशब्हि ग-क्रनी नस्ती निन्डनंगा ग उनगणित निःशब्दिच तं उनस्ती निःसंगागु ग्रथा जया ग्राबिवत जउजगु स्वीह हे माया नस्तां गु स्वीह स्गाक्ती लणणा नस्नि मग पाहलां भपद्रज्ञ बंदित मीनी जोभद समिन्ना भ अन्ह्य

अनाम्सा अनंत तब पद निर्माय निज्ञान्ता १९५१। ज्यदेव १९ - अनाम्तिदेवीची १९ उनाश्विन शुक्क पद्नीं अंबा बेसिकी भिंहासनीं हो गमितपदे पास्तन घट-स्थापना ती करूनी हो ग मूलमंत्रें जप करूनी भोंगते रक्ष्म हे उनी हो ग ब्रह्मा विष्णु छुद्र उनाइ वें पूजन किर्ति हो गुउदों बाढा उदो अंगावाई माउछीचा है। गाउँदाकारं गर्नती काय महिमा वर्षितना हो गुध्ना हितीयेचे दिवशीं मिवती चीस्ष्ट योगिनी हो ॥ सक्छां मध्यं श्रेष्ठ पर्थ्यामा ची जननी ही ए कस्तूरी मळवट भांगीं शेंदुर भरूनी ही एउदीं कीर्र गर्जिन समस्त-चामंडा मिळुनी हो ए उदी ० ए तृतियेचे दिवशी अंबेशंगार मांछ छोहा गुमबबट चोका पातब कंठीं हार मुक्ता फछा हो भ कंठी चींपदक

कांसे पीतांबर कीमाठा हो । अन्थभनामिर्विता अंबे खंदरित काळा हा गु उदा ० गु - जन्थी-स्यादिन सी विश्वन्यापक जनमी हो गु उपासका पाहरी अंबे प्रसन्त अंतः करेंग हो । पूर्ण रूपं पाहरी जगन्मात मन माछिनी है। गुभाना-च्या माउछी सुर ते चेती छा टांगुणी हा गुउद्गि०४ भ पंचामी चे दिवशीं बतं तं उषागढि छ । अध्येपाध्यनं तुनढाभगा नीं स्तिवती हो। एकी चे समयीं कीरती जागरण हिर्कथा है। पुअनुनं दें मिमतें खड़ावें की उताहा गु उदा० ५ गु षकी च दिवशी मकां अगनं-द वर्षका है। भे धाउन दिव्या हस्ली गांधक हैर्ष घालका है। भुक्किती रम्क अपितां देशी हार मुन्हा फकों हो गुजामुंबा मागुनां अनंबा प्रस्-

अगर्या भारती भन्छकां हो गुउद्दा गुद्द भ सप्तमीचे दिनशी सप्तथंग्रा-डावरीही गुनेधं तूं नांदशी भीवित पृष्पं नानापरी हो गु जाई जुई-स्वती पुना रखीयली बर्बी हो गुभन संबर्ध पुरती स्कृति द्या वर्चवरी हो गुउद्भुव भुअक्षमीचे दिवशीं अस्भुमा नाराधानी हो सहााद्रीं परवानी पाहिला अभी जगज्जननी हो ५ मन मासं माहिलं शर्ण उनाकों देजागुनी हा गुस्तन पान देउनी सुकों के छे अंत= कारणी है। अउदा० अट अनवमीचे दिवशीं नगादिवासाचें पारणें हो स्राशाती जाप होमहबने सद्भती करूनी हो भुषद्भ अनेने नेबे द्या सा अपियुक्ती भी अनि । अना चार्य श्रामणा लिपि कें वृश्निया करें करूनी हैं

उद्ये १९९१ दशमीन्या दिन्शी उनंना निध् सीमा उछुं धनीं हो भू मिंग रूढ़ होउनि दारूण शस्तं करि घडनी हो भ मारिकं दानन शंभानियं भ रेसे किती हो । विप्रास्पदास अंबेने ध्रीता हो। उद्या अग्रती श्रीशंकराची - लबध्वती विकाला बलांड माळा । वीषंकंड काका भीनेभी ज्वाका। जानण्य संदर मस्तकीं बाका। तथानया म-छ निर्मक जोह खकस्का। अयदेव अयदेव अय श्रीशंकरा। अगरित जोबाक तम कपूर गीरा ११ ६० १९ कपूरेगीरभीका नयनवीशाका। -अधीमी पार्वती सुमनाच्या माळा । विभूतीचे उध्छण शितिकंड नीका रेमाशंकर् शोभे उभा बल्हाळा। जयं २ ये देवीं देखीं सागरमंथन पे

भारता केंद्रं। त्यामाजीं अवचीतां ६७६७ में उठें। तिंखां असूर्पणं प्राशन-४ केंद्रं। नीठकंढ नाम प्रसिद्ध झाँठं। जयक ३५ व्या घ्रांबर फिण्वरधर संदर मदनारी। पंचानन मनमाहन मुन्जिन सुख्कारी। शतकारी-चें बीज वांचें उधारी। रघुकुळिटळक रामदासा अंतरी। जयव ४५।

(8)

[OrderDescription]
,CREATED=10.08.20 11:32
,TRANSFERRED=2020/08/10 at 11:34:10
,PAGES=9
,TYPE=STD
,NAME=S0003453
,Book Name=M-939-ARTI SHRI VISHNU DEVI SHIV
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF

,FILE6=0000006.TIF

FILE7=00000007.TIF ,FILE8=00000008.TIF ,FILE9=0000009.TIF